मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066
UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

संरक्षक
प्रो. जनक दुलारी आही
कुलपति

प्रधान सम्पादक
प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक
प्रो. भवतोष इन्द्रगुरू
प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. छबिल कुमार मेहेर

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश) - 470003
दूरभाष : (07582) 297133
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. ए.एन. शर्मा
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- डॉ. अनुपमा कौशिक
- डॉ. प्रकाश जोशी

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-80, जनवरी-जून 2021
ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है तथा यहाँ प्रकाशित आलेखों की 'प्लेजिरिज्म' (Plagiarism) सम्बन्धी शुचिता की जिम्मेदारी लेखकों की है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :
मध्य भारती
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 297133
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :
अमन प्रकाशन
कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क		
	प्रति अंक	आजीवन
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-

अनुक्रमणिका

साहित्य में व्यक्ति और समाज का रूपांतरण 7
राजेन्द्र यादव

भोजपुरी लोक में वैकल्पिक इतिहासबोध की वाचिक परम्परा 16
राघवेन्द्र प्रताप सिंह

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का इतिहास-बोध 24
विवेकानन्द उपाध्याय

छत्तीसगढ़ की प्राचीन कला संस्कृति 31
मोहन लाल चढ़ार

शिक्षा, बच्चे एवं मानसिक स्वास्थ्य : एक सामयिक सन्दर्भ 36
संजय शर्मा एवं विवेक जायसवाल

भारत में जनहित याचिकाओं की प्रांसगिकता और उपलब्धियां 42
राघवेन्द्र प्रताप सिंह

मानवाधिकारों के संरक्षण एवं संवर्धन में नागर समाज की भूमिका 49
मिथिलेश कुमार

भारत के ग्रामीण विकास में ग्रामीण पर्यटन का योगदान 56
राजबहादुर अनुरागी

बालरामायण में सामाजिक सद्भाव 65
रामहेत गौतम

हजारीप्रसाद द्विवेदी का व्याकरणिक-चिन्तन 73
चन्दन तिवारी

सिलसिला ए चिश्ती और हिन्दुस्तानी मौसिक़ी 81
आकाश जैन

बालरामायण में सामाजिक सद्भाव

रामहेत गौतम

भारत एक विशाल देश है, जहां सदियों से विभिन्न धर्मों के लोग मिल-जुलकर रहते आ रहे हैं। सहिष्णुता, बहु-समाजवाद और मेल-मिलाप से रहने की समृद्ध परम्पराओं ने देश को एक अलग पहचान दी है तथा भारतीय सभ्यता में सतत् बदलाव हुए हैं। आजादी के बाद संविधान में भारत को एक धर्म निरपेक्ष देश घोषित किया गया है। राज्य प्रशासन किसी विशेष धर्म, जाति, वर्ग, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव नहीं करता। सभी के लिए समान अवसरों के संबंध में संवैधानिक व्यवस्थाएँ हैं। कोई अपने आपको अलग महसूस न करे इसके लिए संविधान में सभी प्रकार के सकारात्मक और ऐहतियाती उपाय किए गये हैं फिर भी बार-बार साम्प्रदायिक दंगे, जातीय हिंसा आदि होते रहते हैं। मूल रूप से कोई भी धर्म न तो वैर भाव तथा हिंसा की इजाजत देता है और न ही नफरत का प्रचार करता है। जो लोग धार्मिक चिह्नों और मंचों का उपयोग हिंसा, धार्मिक द्वेश और विवादों के लिए करते हैं वे अपने धर्म के सच्चे प्रवक्ता न होकर अतिवादी स्वार्थी लोग हैं। इसलिए यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम केवल ऐसे लोगों को ही स्वीकृति और प्रशंसा से प्रोत्साहित करें, जो साम्प्रदायिक व सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के लिए निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं। कुछ स्वार्थी शरारती लोग धार्मिक शिक्षाओं का अपने स्वार्थ, निजी महत्वाकांक्षाओं और लाभ के लिए गलत व्याख्या करके भ्रम पैदा करते हैं। छोटी और मामूली घटना को स्वार्थी लोग बड़ा रूप दे देते हैं।

हमारे राष्ट्र प्रेमी नेताओं ने विकासशील भारत को एक विकसित देश और आर्थिक महाशक्ति बनाने का सपना देखा था। देश की आंतरिक शांति व्यवस्था और खासतौर से सांप्रदायिक व सामाजिक सद्भाव के बिना यह सपना साकार नहीं हो सकता।

सामर्थ्यवान लोगों से धर्म, जाति, रंग, संम्प्रदाय से ऊपर उठकर सामाजिक सद्भावना के विकास में योगदान अपेक्षित है क्योंकि सामाजिक सद्भावना से ही अच्छे समाज एवं राष्ट्र का निर्माण संभव है। अलग-अलग रहने में नहीं। सद्भाव के बिगड़ने से समाज पतनोन्मुखी होता है। अतः समाज के सद्भाव को बिगाड़ने वाले कारणों में सांप्रदायिकता की भावना, स्वार्थ प्रवृत्ति तथा क्षुब्ध राजनीतिक इच्छा आदि से ऊपर उठकर ही सामाजिक समरसता स्थापित की जा सकती है। हमें मानवतावादी होकर सोचना होगा तथा तदनुरूप कार्य करना होगा।

कुछ भ्रमित सिरफिरे अराजक लोग समाजिक सद्भाव को बिगाड़ने के लिए कुछ वेरोजगार युवकों को विभिन्न प्रलोभवनों से भ्रमित करके अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं। ऐसे लोग कुछ इसी प्रकार के राजनेताओं का

मध्य भारती-80, जनवरी-जून, 2021, ISSN 0974-0066, *pp. 65-72*
यूजीसी केयर लिस्ट, ग्रुप-सी (मल्टीडिसिप्लिनरी), क्र.सं.-15

संरक्षण भी पाकर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं। इस सब पर समय रहते काबू न पाया गया तो देश प्रगति नहीं कर सकेगा। हमें बदलते समय और मूल्यों के अनुसार समाज को भी बदलना होगा।

साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं पथ प्रदर्शक भी है। संस्कृत साहित्य की एक समृद्ध परम्परा है जो मूलतः लोकहित के लिए ही समर्पित रही है। 'संगच्छध्वंसंवदध्वंसंवोमनांसि जानताम्' का उद्घोष करते वेद्, 'तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा' का उपदेश करते उपनिषद्, 'तपः स्वाध्याय' तथा 'सत्य-वाक्यो –दृढ़व्रतः' का व्यवहार ज्ञान कराते महाकाव्य सद्भावना के संस्थापक हैं। 'अत्तदीपोभव' जैसे महावाक्य जनमानस को जागृत बनाये रखते हैं। कालक्रम के सहारे प्रवाहमान साहित्य सरिता की यात्रा के 9वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और दशवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के मध्य ज्ञानालोक को विखेरने वाले नर्मदा तट के पावनत्व को अनुभूत करते हुए महाकवि यायावर राजशेखर ने अपनी कृतियों कर्पूरमंजरीसट्टक, विद्धशालभञ्जि नाटिका, बालरामायण, बालभारत एवं काव्य मीमांसा से लोक को संरक्षित सवंर्धित किया है। महाकवि की भाषा व्यंग्यपूर्ण चुटीले अंदाज में लोगों को ज्ञानामृत-पान कराती है। महाकवि ने घूम-घूमकर ज्ञानार्जन व ज्ञान दान किया है अतः वे यायावर कहलाये। यायावर का सूक्तामृत तो सज्जनों के द्वारा स्वयमेव ग्राह है।[1] राजशेखर की बालरामायण और बालभारत ज्ञानसागर के विशाल भण्डार को गागर रूप में संजोये हुए हैं। दोनों ग्रन्थों का ज्ञानसुवासित-काव्यामृत ज्ञानबाल अर्थात् अल्पज्ञ और वयोबाल अर्थात् बच्चे दोनों को भी तृप्त करते हुए सामाजिक सद्भाव का बीजारोपण करते हैं।

समाज की प्रथम इकाई व्यक्ति है। अतः एक आदर्श व्यक्ति की जिज्ञासा महाकवि वाल्मीकि ने की[2] तथा सात काण्डों में निबद्ध 24000 श्लोकात्मक आर्षकाव्य सृजित किया। इस अपार विषद् ज्ञान सागर[3] को गागर में भरने के लिए कवि ने सुभाषितोक्ति समन्वित[4] इस दश अंकात्मक रूपक की सर्जना की है। समाज का दर्पण और दीपक दोनों के गुणमय बालरामायण के समाज से सीधा सरोकार रखने वाले तथा सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने में प्रासंगिक पहलू कुछ इस प्रकार हैं।

पुरुषार्थ चतुष्टय में प्रथम पुरुषार्थ धर्म है जिसका आधान शिक्षा के माध्यम से होता है। 'कश्चित्प्रगल्भते नहिसर्वः सर्वंजानाति।' सभी सभी विद्याओं में प्रवीण नहीं होते, कोई भी व्यक्ति किसी न किसी विद्या में प्रवीण होता है।[5] कथन से उपदिष्ट किया है कि कोई सामाजिक अपनी विद्वत्ता के घमण्ड में किसी का उपहास एवं उपेक्षा न करे। क्योंकि उपेक्षा और उपहास से सद्भाव विगड़ता है।

'मैं ही सर्वश्रेष्ठ' का मनोविकार भी सामाजिक सद्भाव के ताने-बाने को विखेर देता है। जैसा कि बाल रामायण के आरम्भ में ही सूत्रधार कहता है कि-दाक्षिणात्य लोगनारी से पराभव की शिक्षा नहीं पाये हैं।[6] यह मानसिकता आज भी व्याप्त है जो स्त्री-पुरुषों के बीच के सद्भाव को आहत करती है। शिक्षित स्त्री समाज व परिवार को संवार देती है।

कला कौशल सामाजिक जीवन को सरस बना देता है। अपनी सुशिक्षित पुत्री के लिए सुशिक्षितवर की इच्छा करता हुआ सूत्रधार कहता है कि-वीर तथा अद्भुत् रसबहुल प्रबन्ध में लोक श्रेष्ठ कुशल व्यक्ति ही नाट्य एवं नृत्य में प्रवीणा मेरी कन्या से परिणय करेगा।[7] स्त्री कौशल के संबंध में भी प्राप्त होता है कि 'सद्विज्ञानं-कुलतिलकता याति-दारैरुदारैः' अच्छी स्त्रियों के द्वारा सद्विज्ञान-कुल को सुशोभित करने वाला हो जाता है।[8]

बालरामायण के पंचम अंक में बलात्कार पूर्वक नाक काट लिए जाने पर सूर्पणखा अवगुण्ठन में मुँह छिपाती है।[9] इससे पता चलता है कि अवगुंठन (मुँह छिपाना) लाज का परिचायक रहा है। आज भारतीय समाज में शिक्षा से आलोकित स्त्री के लिए अवगुण्ठन आवश्यक नहीं माना जाता।

भारतीय समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था ने समाज के सद्भाव को तहस-नहस किया है। शिक्षा प्राप्ति का प्रवेश-द्वार उपनयन संस्कार इस वर्ण व्यवस्था के कारण ही एक विशाल जनसमूह के लिए प्रतिबंधित रहा है। फिर कैसे सिद्ध होता हितोपदेश वचन-विद्याददाति-विनयं, विनयाद् याति पात्रतां, पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मं ततः सुखम्।।[10] जिसको शिक्षा का अधिकार था वे वर्ण परिवर्तन कर सकते थे। जैसा विश्वामित्र ने अपनी शिक्षा के बलबूते अपना वर्ण परिवर्तन कर लिया था। 'अथैकजन्मानुभूतक्षत्रब्रह्मभावः'[11] जब समाज में मान व प्रतिष्ठाजन्म - जाति, कुलआदि के आधार पर निर्धारित होने लगती है तो समाज का सद्भाव विगड़ने लगता है। मान-प्रतिष्ठा सामाजिक विषय है आर्थिक नहीं। जैसे कि भृंगिरिटि शिव के संबन्ध में कहता है कि- नग्न रहने वाले शम्भु को दिव्य वस्त्रधारी प्रणाम करते हैं। हाथी की सवारी करने वाला इन्द्र भी उस बैल-वाहन की सेवा करता है। धनपति कुबेर भी उस कपाल पात्री की स्तुति करते हैं। वे दुर्गति और विभुता के परम स्थान हैं।[12]

अपमान व तिरस्कार भी समाज के सद्भाव को मिटा देता है। जैसे कि 'शिव-धनुष का खण्डन' परशुराम को अपमान महसूस होता है और वहां सद्भाव क्षीण हो जाता है।[13] जो बाद में राम की चतुराई से ठीक हो पाता है।

स्त्री को वस्तु मानना स्त्री के प्रति असद्भाव है। उस को रत्न की श्रेणी में रखा गया है यथा-रावण- 'स्त्रीरत्नं तद्गर्भ संभवमितोलभ्यं च लालायिता'।[14]

हठधर्मिता भी सद्भाव को नुकसान पहुँचाती है। जैसे कि कैकेयी की हठधर्मिता राजा दशरथ के परिवार के ताने-बाने को विखण्डित कर देती है।[15] हठविवेक शून्य बना देती है। बालरामायण के छठे अंक में मायामय और शूर्पणखा दशरथ और कैकेयी का छद्म वेष धारण कर राम को चौदह वर्ष का वनवास दे देते हैं लेकिन वामदेव आदि के द्वारा रहस्योद्घाटन कर देने के बाद भी राम कहते हैं कि- उसे पिता का आदेश समझकर शिर झुकाकर माना है। चाहे वह यक्ष हो, राक्षस हो, भगवान् या रघुपति दशरथ। भरत के द्वारा रक्षित अपनी पुरी से निवृत होकर चौदह वर्ष वन में वास करके ही लौटूँगा।[16]

किसी भी व्यक्ति के अपशब्द बोलना भी एक सामाजिक असद्भाव है। सिंहनाद के द्वारा वाली के प्रति 'वाली पुनर्वानरः' कहे जाने पर राम उसके वचनों को रावण का तिरस्कार बतलाते हैं।[17] यह अनुचित व्यवहार है इससे भी सामाजिक सद्भाव खंडित होता है। विद्रोह की संभावना बड़ जाती है। जैसे कि लक्ष्मण के विद्रोही स्वर- यदि पिता अनुचित प्रेम कर रहे हैं तो वे त्याज्य हैं और यदि कैकेयी का ऐसा कुचरित्र है तो वहां मेरी गति मंद है और यदि आर्य भरत सूर्यवंश को कलंकित कर रहे हैं तो प्रत्यंचा को मुखरित कर रही धनुष मेरे द्वारा उठायी जायेगी।[18]

सद् व्यसनतो कीर्तिकर होता है परन्तु असद् व्यसन से ग्रस्त व्यक्ति सद्भावना शून्य होकर व्यवहार करता है जिससे सामाजिक भावना भी विखण्डित हो जाती है। सापत्न्य कलह भी आपसी सद्भाव के अभाव में ही होता है। महाभारत के मुसल पर्व में व्यसन के कारण ही लोग आपस में कट-मर जाते हैं। निर्व्यसनी सज्जन होते हैं और उनका प्रेमोन्मेष असीम होता है। 'सतां-प्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमाविजयते।'[19]

प्रतीको की अवमानना से सामाजिक सद्भाव बिगड़ता है 'गरीयान् हिगुरुधनुर्भंगापराधः।' सीता स्वयंवर के अवसर पर शिव-धनुष के खण्डित हो जाने पर परशुराम का क्रोध भड़क जाता है क्योंकि वह धनुष उनकी आस्था से जुड़ा हुआ था।[20] लोगों को प्रतीकों की अवमानना से बचना चाहिए।

सीता सखी सिन्दूरिका को स्वरचित वचन सुनाती है-मयूर के पत्र के समान छवि वाला एक तरफा प्रेम पर्याप्त नहीं। दोनों तरफ समभावी नीलकण्ठ के पंख के समान प्रेम प्रशंसनीय है।[21] काम की आज्ञा अन्यों का तिरस्कार कर उद्भाषित होती है।[22]

परिषदियमृषीणामेव वृद्धोनदेन्द्रः कथमथ तदमुष्मिन् मैथिलीलालसोऽपि। निज भुजबल– प्यद्वीरवर्ये समाजे हठहरणविनोदं राक्षसेन्द्रः करोतु।।[23] यह ऋषि परिषद् और यह राजा भी वृद्ध है फिर सीताभिलाषी मैं रावण अपने बाहुबल से द्वीप वीर समाज में हठ पूर्वक हरण का विनाद करुं। भीष्म द्वारा काशी नरेश की पुत्रयों का हरण जैसे उदाहरण भी संस्कृत साहित्य में प्राप्त होते हैं। वर्तमान समाज में गन्धर्व, असुर आदि पद्धतियों के विवाह सहर्ष स्वीकार नहीं हैं। यदि इन पद्धतियों के विवाह होते हैं तो अधिकांश मामलों में सामाजिक सद्भाव बिगड़ता है।

बलात्कार - 'रघुकुल राजधानी परिस्थितौ रामलक्ष्मणावभिसरन्ती अनिच्छद्भ्यां ताभ्यां बलात्कार क्रमेणे–शावस्था कृतेति कथं ज्येष्ठभ्रातुः कथयिष्यामि से स्पष्ट है कि बलात्कार जैसी घटनायें उचित नहीं हैं।

स्त्री भोग की वस्तु समझी जाती थी अतः वर्चस्व शाली व्यक्ति किसी की भी बहिन-बेटी का हरण कर लेते थे। अतः नट कहता है कि मैं भी विवाह करूंगा और उसके लिए चाहे समुद्र भी पार करना पड़े वह भी शक्य है।[32] यह घटना हमारे समाज के एक घिनौने चेहरे को उजागर करती है। आज भी अधिकांश लड़कियों का अपहरण और क्रय-विक्रय होता है। आज राजघरानों की बहू बेटियों का अपहरण न के बराबर हो गया है किन्तु कमजोर वर्ग की कन्याओं की स्थिति युगों के बाद भी जस की तस लगता है प्रसिद्ध कथन 'हर नारी देवी की प्रतिमा और बच्चा-बच्चा राम हो' एक रटन्त बात मात्र हो गयी है।

पारिवारिकता भारतीय समाज में सद्भाव को कायम रखने का सशक्त माध्यम है। परिवार समाज की एक ऐसी संस्था होती है जिसमें लोग एक-दूसरे के सुख-दुख के साथी बनकर रहते हैं। जिससे बड़े से बड़ा दुःख सहनीय हो जाता है और छोटी से छोटी खुशी विषद् हो जाती है। बालरामायण के सातवें अंक में समुद्रीय जीवों का दृश्य आता है जिसमें सभी जीव एक परिवार की तरह सद्भाव से रहते हैं।[24] परिजनों से मेलमिलाप संकट में ढाढस प्रदान करता है। जैसे कि रावण की मृत्यु के बाद अलका के द्वारा दुःख जताने पर लंका कहती है कि- कि पुनः स्नेहमयीं समासाद्य प्राणपरित्यनव्यवसायेभ्यो विरताऽस्मि।[25]

वामदेव के द्वारा वन जाने से मना करने पर सीता पत्र के माध्यम से अपनी बात कहती है- राजा शिर झुकाकर जिनके पैर चूमते हैं उन पिताजी से मेरा क्या? इन्द्रसभा के सिंहासन के अर्द्धभाग में बैठने वाले श्वसुर से क्या? वे ही पर्वत मेरे देश हैं और वन भूमि मेरी प्रिय हैं जहां कौशल्या-पुत्र राम के चरणों की वन्दना करूँ और प्रसन्न होऊँ। इससे ज्ञात होता है कि यदि हमसे अपेक्षित कार्य हमारे अनुकूल नही है और हम उसे नहीं करना चाहते तो सबसे अच्छा तरीका है - सविनय अवज्ञा।[26] शील एक आदर्श गुण है। शीलवान लोगों के द्वारा ही समाज में सद्भावना स्थापित, संरक्षित, संवर्धित होती है। 'महतां निःसीमानश्चरित्र विभूतयः'[27] अर्थात् महापुरुषों की चरित सम्पत्ति निःसीम होती है।

किसी भी समाज की मजबूती के लिए लोगों में आत्मबोध होना आवश्यक है। जैसे कि बालरामायण में समुद्र से क्रोधित होकर बात करने के बाद राम समुद्र से कहते हैं कि- (सगौरवं) भगवन! रत्नाकर! नमस्ते नन्वहं प्रशाश्यो भगवतः सागरस्य तदेकवारमविनयोनयो वा क्षम्यतां रामस्य।[28]

रिस्तों की कद्र-रावण दशरथ के प्रति-आप सम्बन्ध में ज्येष्ठ और ब्रह्मविद्या में श्रेष्ठ हो इसलिए क्षमा कर रहा हूँ।[29] मातृगौरव-माता पिता की अपेक्षा हजारों गुणा गौरव वाली होती है।[30] भ्रातृप्रेम- लक्ष्मण के राम के प्रति भ्रातृप्रेम और समर्पण को देखकर दशरथ कहते हैं कि- 'वत्स लक्ष्मण! त्वच्चरितेनामुनाविषीदति प्रसीदति च मे मनः।'[31] दशम अंक में अभिषेक के समय राम के सभी भाई आपस में एक दूसरे से आदर-सत्कार के साथ मिलते हैं। मैत्री सामाजिक सद्भाव में बृद्धि करती है। जटायु दशरथ के लिए संदेश भिजवाता है कि-संपाति के

सहोदर, अरुण की संतान, आपके वशवर्ती तथा नखायुध धारी के लिए जो उचित था, जो रावण के साथ उचित था वह सब आपकी मैत्री के अनुगमन में मैंने किया ताकि आप लज्जित न हों। अब मैं न रहा।[32] भाषागत मर्यादा-बालरामायण में संवादों की भाषा चुटीली है। परस्पर धुरविरोधी पात्रों के बीच भी भाषाई मर्यादा कायम है कितने भी आवेश में संवाद हो पर भाषा सभ्य ही रहती है। रावण परशुराम के मध्य हुए संवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। गीर्वाणवन्द्यचरणस्तवचन्द्रमौलिराचार्यकं स भगवान् यदि नाकरिष्यत्।।[33] जमदग्न्य-रावण के प्रति-भवानिव न सर्वः श्रुत्यर्थवीथोविदग्धः। यतस्तवैवगुरुवद्गुरुपुत्रे प्रवृत्तिः।[34]

तृतीय अंक के आरम्भ में गृध मिथुन के वार्तालाप में दोहद का प्रसंग आता है। गर्भवती सीता को वन भ्रमण की दोहद की पूर्ति के माध्यम से पति-पत्नी एवं अन्य रिस्तों में सद्भाव स्थापित करती है।

तेनत्यक्तेनभुंजीथा का भाव परिजनों में ही नहीं अपितु सभी सामाजिकों में सद्भाव सीापित करता है। सुमन्त्र सीता के इसी भाव को उल्लेखित करते हुए कहते हैं फल या मूल के आस्वाद्य भाग को पहले पति को और उसके बाद देवर लक्ष्मण को देती है अन्त में जो कच्चा-पक्का अति नीरस स्वादहीन भाग स्वयं खाती है।[35] कौशल्या-पुत्रि सीते! कुत्र पुनर्महाराजराजजातया भूत्वा निसर्गदरिद्रगृहिणीत्वं त्वया शिक्षितम्।

जहां ज्ञानी जनों का सम्मान होता है वहां सद्भाव रहता है। ज्ञान से श्रेष्ठता होती है उम्र से नहीं। मतिः परिणमन्ती पुरुष मुदात्तयति न वयः।[36]

आतिथ्य सत्कार भारतीय समाज एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण विशेषण है। शतानन्द रावण के सत्कार हेतु कहता है कि- तदेहिदुर्वत्तमपि मुनिपुत्रमुचतेनसंभावयाव' आईये मुनि विश्रवापुत्र का स्वागत करें।[37] शतानन्द-आप ऋषिपुत्र तथा दिव्य पुरुष हैं तो आपका सत्कार किस प्रकार किया जाये-श्रोत्रियों के लिए वृषभ या बकरा मारा जाता है। दिव्य व्यक्ति के लिए स्रुवा के साथ सुगन्धित द्रव्य दिये जाते हैं।[38]

आचरण ही आशीर्वाद-रानियों द्वारा राम की कुशलता का समाचार पूछने पर सुमन्त कहते हैं कि 'कथं न नाम कुशलं येषां चरितानि जनानामाषिषो भवन्ति'। यहां समझने की मूल बात यह है कि किसी का आचरण ही अनुकरणीय होता है और अनुकर्ता का हितकारी होता है। 'रुदन्त्यपि किमपि जानकी समाधाय मधुरस्य हि जनस्य प्रकृतिरेषातद्यथाकथमपिरमयति।' सरल व्यक्ति स्वयं कष्ट में होते हुए भी दूसरों को खुश करने में लगा रहता है।[39] करुणा सद्भाव के लिए अति आवश्यत गुण है।[40]

रावण की मृत्यु के बाद लंका मानव रूप में आती है और कहती है कि 'परिपालना हि भृत्यान् स्वामिनः स्मारयन्ति न गुणग्रामः[41] सेवकों का हित चिंतन सद्भाव में सहायक है।

मनोरंजन-सीतास्वयंवर के अवसर पर भरताचार्य के द्वारा रचित नाटक- 'भरताचार्येण सीतास्यंवर चरित संबद्धं नूतनं नाटकमुपनिबद्धं सुरसदसिप्रयुक्तं च।'[42] विवाह आदि के अवसर पर लोगों के मनोरंजन से सद्भाव व आनंद में बृद्धि हो जाती है।

बाल रामायण-10.60 से पूर्व सीता तपस्वियों की जीवन चर्या का उल्लेख करती हुई कहती हैं कि- हे आर्यपुत्र हवन के लिए अग्नि प्रज्ज्वलित करने वाले, व्याख्यायमान कथाओं में दत्तचित्त, विविध वैदिक शाखाओं का पाठ करने वाले, धर्मशास्त्र का वर्णन करने वाले, योगाचार की शिक्षा देने वाले, अतिथियों की सेवा करने वाले, पर्णशालाओं में आश्रित तपस्वी हमारे जैसे लोगों को भी संसार के बंधनों से छुड़ाने वाले होते हैं। इतना ही नहीं राम अपने विरोधी रावण को नीतिगत प्रस्ताव देते हैं कि- हे रावण! सीता को दीजिए। राम स्वयं याचना कर रहे हैं। आपका यह कौन सा मतिविभ्रम है। नीति का स्मरण कीजिए। अब भी कुछ नहीं गया।[43]

रावण की मृत्यु के बाद राम के साथ राक्षस भी अयोध्या जाते हैं। इससे पता चलता है कि विभीषणादि जो राम के विरोधी नहीं थे वे राम के मित्र हो जाते हैं और उसके बाद भी लंका में राक्षसराज

विभीषण राक्षसों के साथ सुख से रहते हैं। इस बात से यही संदेश प्राप्त होता है कि संप्रदाय के आधार पर न कोई दुष्ट होता है न कोई सज्जन। विभीषण राक्षस संप्रदाय से होते हुए भी सद्गुण सम्पन्न है और राम का मित्र है। बालि और सुग्रीव सगे भाई होते हुए भी एक विरोधी है एक मित्र है।

समय-समय पर साथियों अधीनस्तों को प्रोत्साहित करते रहने से उनमें अपनापन बना रहता है तथा नाराजगी तथा विद्रोह की भावना नहीं पनपती। यह एक ऐसा व्यवहार है जिसमें बिना कुछ खर्च किये किसी भी व्यक्ति के कुशलता से कार्य सम्पादन में वृद्धि हो जाती है। जैसे रामः-अहा! बानरों का श्रेष्ठ पराक्रम धन्य है और महासागर की महिमा भी धन्य है कि ये तो पहाड़ उखाड़ रहे हैं और यह भी ऐसे महान् भार में अपना हाथ दे रखा है।[44] ऐसी संवेदनशीलता सद्फलित होती है। बाल रामायण में माया मय सोचता है कि काव्य में कविगण और नीति में मंत्रीगण दूसरे के दुःख से दुःखी तथा दूसरे के सुख से सुखी होते हैं।[45] इससे स्पष्ट होता है कि संवेदनशीलता प्रत्येक समाज के लिए एक आवश्य तत्व है जो समाज की जीवन्त बनाये रखता है।

आपसी मंत्रणा करते रहने से लोगों में सन्देह जाग्रत नहीं होता और आपसी सद्भाव बना रहता है। मंत्रणा बिना तो राजा भी सुख से नहीं रह सकता। तो साधारण सामाजिकों की बात ही क्या है।[46] प्रतिचिकीर्षा सामाजिक सद्भावना को मिटा देती है। मनमानी और आपसी बदले की भावना से लोग दुःख से जीते हैं।[47]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बालरामायण में ऐसे सामाजिक सन्दर्भों की भरमार है जो आज भी सामाजिक सद्भाव को स्थापित करने में अहम हैं हर कोई किसी न किसी विद्या में प्रवीण होता है कथन हर एक व्यक्ति को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान करता है। तथा लोगों को किसी के तिरस्कार करने से रोकता है। सूत्रधार द्वारा सुशिक्षित वेटी के लिए सुशिक्षित वर की खोज स्त्री गौरव को बढ़ाने की प्रेरणा है। नाक काटे जाने पर मुँह छुपाने पर मजबूर सूर्पणखा का दृश्य समाज को अपने अतीत को दोहराने से रोकता है। भृंगिरिटि का कथन कि इन्द्र व कुवेर भी बैल वाहन कपाली शिव की स्तुति करते हैं इस बात का संकेत है कि पद व दौलत की अपेक्षा सामाजिक स्वीकर्यता ही व्यक्ति की श्रेष्ठता को निर्धारित करती है। शिवधनुष के खण्डित होने पर परशुराम के कोप का वर्णन इस बात के लिए सावधान करता है कि कोई किसी के आस्था के प्रतीकों के साथ छेड़छाड़ न करे। कैकेयी की हठधर्मिता के दुष्परिणाम हठधर्मिता से बचने की शिक्षा देते हैं। सिंहनाद द्वारा बाली को पुनर्वावरः कहने पर राम के द्वारा रावण का तिरस्कार करार देना सिखाता है कि हम किसी का भी तिरस्कार न करें। लंका विजयी राम के अयोध्या राज्याभिषेक के अवसर पर विभीषण आदि राक्षसों का जाना इस बात का प्रमाण है कि सम्पूर्ण राक्षस जाति दुष्टन नहीं थी। राम-रावण का संघर्ष सत्ता का संघर्ष था। युद्ध से ठीक पहले तक राम द्वारा रावण को नीतिगत प्रस्ताव इस बात का संकेत है कि जहाँ तक हो सके युद्ध टाले जाने चाहिए। 'सतांप्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमाविजयते कथन' लोगों को व्यसन से दूर रहने की अपील करता है। राम द्वारा वानरों की प्रशंसा संदेश है कि अपने अधीनस्तों की समय-समय पर प्रशंसा करना उनके कार्यकौशल को बढ़ाने बाला होता है। सातवें अंक में कर्पूरचण्ड का कथन कि मंत्रणा राजा और प्रजा दोनों के लिए आवश्यक है। यह सामाजिकों में असद्भाव पैदा नहीं होने देती। पांचवे अंक में मायामय की सोच कि 'काव्य में कवि तथा नीति में मंत्री दूसरे सामाजिक के सुख-दुःख से सुखी-दुःखी होते हैं। सामाजिक संवेदनशीलता को व्यक्ता करता है। किसी सामाजिक का प्रेम मयूर पंखवत् एक तरफा न होकर नीलकण्ठपंखवत् उभय पक्षीय हो। एक पक्षीय प्रेम में स्त्री हरण जहाँ स्त्री के आत्म गौरव को रौंद डालता है तो वहीं अपहरता सामाजिक प्रतिष्ठा खोकर वहिष्कृत हो जाता है। वनगमन के अवसर पर सीता को घर पर ही रुकने के लिए कहे जाने पर सीता विनम्रतापूर्वक पति के साथ रहने की बात कह देती है। इस शील से सीता अपनी बात भी कह देती है और

परिवार के सद्भाव को भी नहीं टूटने देती। समुद्र सेतु निर्माण के अवसर पर समुद्र का आत्मबोध देखने ही बनता है। विरोधी रावण भी दशरथ की कद्र करता है। सम्पूर्ण नाटक में मातृ प्रेम, भ्रातृप्रेम, मैत्री, जीवन साथी आदि रिस्तों को वेहतर तरीके से निभाया जाता है। विद्वानों, अतिथियों का सत्कार जगह-जगह किया गया है। आचरण से उपदेश, परसुख का भाव, करुणा, आश्रितों की मान-प्रतिष्ठा आदि भी यथावसर प्राप्त होती है। पुरुषार्थ चतुष्टय भी जगह-जगहा वर्णित हैं। इस रूपक के दर्शन से रसिकरसान्वित होने के साथ-साथ एक अच्छे सामाजिक व्यक्ति, आदर्श नागरिक होने की शिक्षा आत्मसात करता है।

संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470004

सन्दर्भ -

1. *बालरामायण-1.10*
2. *वाल्मीकिरामायण-1.1.2-5*
3. *रघुवंश-1.2*
4. *'इहभणितिगुणोविद्यते' बालरामायण-1.12*
5. *बालरामायण- 1.6 के बाद सूत्रधार का कथन।*
6. *'नारीपरिभवं सोढुंदाक्षिणात्याशिक्षिताः।' बालरामायण-1.3*
7. *बालरामायण-1.2*
8. *बालरामायण-5.75 से पूर्व।,*
9. *बलात्कारक्रमेणे–शावस्था —तेति.... बाल.रा.-5.76 के बाद शूर्पणखा कथन।*
10. *हितोपदेश, प्रस्तावना-6*
11. *बालरामायण-3.5 से पूर्व चित्र शिखण्ड का कथन।*
12. *बालरामायण- 2.4*
13. *बालरामायण- 4.51-58*
14. *बालरामायण- 1.30*
15. *बालरामायण- 6.15*
16. *बालरामायण- 6.11*
17. *बालरामायण- 7.90*
18. *बालरामायण- 6.17*
19. *बालरामायण-1.8*
20. *बालरामायण-4.57 से पूर्व।*
21. *बालरामायण- 5.14*
22. *बालरामायण- 6.4*
23. *बालरामायण- 1.60*
24. *बालरामायण- 7.45*
25. *बालरामायण- 10.1 के बाद लंका का कथन।*
26. *बालरामायण- 6.19*
27. *बालरामायण-7.40*
28. *बालरामायण-7.36 के बाद राम का कथन।*
29. *बालरामायण-1.59 के बाद रावण का कथन*

30. बालरामायण-4.30 दशरथ का कथन।
31. बालरामायण- 6.22 से पूर्वदशरथ का कथन।
32. बालरामायण-6.71
33. बालरामायण-2.36
34. बालरामायण-2.60
35. बालरामायण-6.41
36. बालरामायण-9.21 के बाद पुरन्दर का कथन।
37. बालरामायण-1.37 के बाद शतानन्द का कथन।
38. बालरामायण-1.37 के बाद शतानन्द का कथन।
39. बालरामायण-4.47 के बाद राम का कथन।
40. बालरामायण-8.22 के बाद रावण का कथन।
41. बालरामायण-10.1 से पूर्वलंका का कथन।
42. बालरामायण-3.9 के बाद चित्रशिखण्ड का कथन।
43. बालरामायण-9.19
44. बालरामायण-7.47 के बाद राम का कथन।
45. बालरामायण- 5.3
46. बालरामायण-7.01 के बाद कर्पूरचण्ड का कथन।
47. बालरामायण-1.25